अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

# भारतीय नारी का यथार्थांकन: अनामिका

**प्रा. डॉ. महेश वसंतराव गांगुर्डे,** प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, अक्कलकुआँ, जि. नंदुरबार

उत्तरशती का महिला लेखन अनेक संभावनाएँ लेकर प्रस्तुत हुआ और इक्कीसवीं शती में ये संभावनाएँ सामने आयी। महिला लेखन ने गति प्राप्त की, यह गति गुणात्मक और संख्यात्मक दोनों रूपों में रही है। इक्कीसवीं शती का महिला लेखन नारी के समझौतावादी दृष्टिकोण का विरोध करता है। अनुभुति की सघनता, विचार की तीव्रता, स्वानुभव का प्रत्यक्षीकरण अत्यंत आत्मीयता एवं मार्मिकता के साथ इसमें चित्रित हुआ है। डॉ. सावित्री डागा मानती है कि "आज की लेखिकाएँ 'मैं नीर भरी दुख की बदली', 'परिचय इतना इतिहास यही', 'उमड़ी कल थी', 'मिट आज चली' वाली मानसिकता से मुक्त हो चुकी है। उनकी आँखों में आँसुओं का पानी ही नहीं आक्रोश की आग भी सहज ही देखी जा सकती है।"[1] आज का महिला लेखन महिलाओं की समस्याओं को आधार बनाकर लिखा जा रहा है। मुलत: यह लेखन नारी की अस्मिता, उसके अस्तित्व को दृष्टिकेंद्र में रखते हुए उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक क्षेत्रों में विचार करने का और व्यवसाय करने का खुला आकाश एवं अवसर देता है। उसे मानवी रूप में जीने का वातावरण देकर उसके सशक्तिकरण पर बल देता है। इस संदर्भ में जगदीश्वर चतुर्वेदी लिखते हैं "पुरुष अपनी अस्मिता का स्वयं निर्माता था किंतु स्त्री को यह हक नहीं था। स्त्री ने जब अपने हकों की माँग की, अपने लिए सार्वजनिक जीवन में स्थान, स्पष्ट अभिव्यक्ति, स्वतंत्र पहचान और लिखने की कोशिश की, लज्जा को त्यागकर सहज शैली में व्यवहार करना शुरू किया तब उसे अपराधिनी, पापीनी, बदचलन वगैरेह विशेषणों से सुशोभित कर दिया। पुरुष निर्मित ढाँचे, नियमों, मूल्यों एवं रीवाजों से विचलन को बदचलनी का रूप दे दिया गया।"[2] परंतु इस प्रकार आरोपों से स्त्री डगमगाई नहीं उसने अपने अस्तित्व का संघर्ष जारी रखा और अपने सशक्त लेखन द्वारा नारी स्वभाव की उदात्तता को अभिव्यक्त किया। हिंदी की लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के प्रश्नों, समस्याओं, अवस्थाओं और उसके मानसिक संघर्ष को प्रमुख विषय बनाकर साहित्य सृजन किया है। आज भी स्त्री की स्वाधीनता अत्यंत सीमित है। वह अभी भी परंपरा से मुक्त नहीं हुई है। इसलिए लेखिकाओं ने स्त्री स्वतंत्रता के स्वर को प्रखरता से प्रस्तुत किया है। आज स्त्री का शोषण, उसका उत्पीड़न, उसका अपमान, उसका हाशिए का जीवन स्त्री लेखन के द्वारा अभिव्यक्त हो रहा है। यह ध्यान रखना होगा कि नारी अस्मिता और अस्तित्व का प्रश्न देश, काल और संस्कृति से प्रभावित होता है। भारतीय नारी आज जागृत हो चुकी है। उसमें स्वाभिमान है वह आत्मनिर्भर भी हो रही है। उसमें अपार बौद्धिक क्षमता भी है फिर भी वह अपने परिवार से सम्पृक्त रहती है। इक्कीसवीं शती के स्त्री लेखन में नारी को उसकी कुण्ठा से मुक्त करने का प्रयास हुआ है। यह महत्वपूर्ण बात है कि नारीने शिक्षा ग्रहण कर अपने अस्तित्व बोध की चेतना को ग्रहण किया है। उसने न केवल अपनी क्षमता को पहचाना है बल्कि अपने पर आरोपित रूढ़ियों और अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास भी किया है। डॉ. सुदेश बत्रा के शब्दों में "महिला रचनाकारों ने नारी को उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व दिया है - वहाँ नारी मात्र एक शरीर या वस्तु नहीं है। वह स्वतंत्र निर्णय लेने वाली साहसी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

और एक मस्तिष्क भी है... अनामिका जैसी सशक्त लेखिका ने नारी की बद्धमूल जड़ता से उसकी मुक्ति, उसकी सोच, उसकी वेदना, उसकी विवशता और उसकी स्वतंत्र सत्ता को प्रामाणिकता से चित्रित किया है।"[3]

अनामिका एकमात्र ऐसी लेखिका है जिसने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण आदि विधाओं के साथ निबंध विधा पर अपनी लेखनी चलाई है। जिसके विचार केंद्र में स्त्री है। इक्कीसवीं शती में उनके छह निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं - स्त्री का मानचित्र (९९), मन मांझने की जरूरत (२००८), पानी जो पत्थर पीता है (२०१२), मौसम बदलने की आहट (२०१२), स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा (२०१२), स्वाधीनता का स्त्री पक्ष (२०१२), स्त्री विमर्श का लोकपक्ष (२०१२) इन निबंध संग्रहों में नारी के विविध रूपों, उसकी समस्याओं, उसकी सोच, उसकी मानसिकता, उसकी विवशता, उसकी स्वतंत्रता पर गहन चिंतन व्यक्त हुआ है। निबंध की परिभाषा देते हुए जयनाथ नलिन ने लिखा है "निबंध स्वाधीन चिंतन और निच्छल अनुभूतियों का सरस सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन है।"[4] उनकी यह व्याख्या अनामिका के निबंधों में शतप्रतिशत दृष्टिगत होती है। अनामिका के निबंध आकार में लघु परंतु विचारोत्पादक हैं। सुगठितता, सुव्यवस्थितता, सुक्रमबद्धता एवं रोचकता उनकी विशेषता है। उनके निबंधों में भावना और कल्पना का विलास नहीं अपितु बौद्धिक विवाद हैं, चिंतन है, वैचारिकता है, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति है।

भारतीय नारी की यथार्थ स्थिति का वर्णन करते हुए अनामिका ने 'मन मांझने की जरूरत' निबंध में लिखा है कि "इतने दिन बखत भांडे मांझे, अब राख मल-मलकर लोगों का मन मांझने बैठी है : हम औरतों का खुदा मालिक 'जेंडर-सेंसिटाइजेशन' का सबसे उपयुक्त सांस्कृतिक पर्याय मुझे तो 'मर्दों का मन मांझना' ही सूझ रहा है... लहूलुहान होना वैसे तो, औरतों की नियति मानी जाती है।"[5] फिर भी वह घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही है। एक ओर वह नौकरी करती है तो दूसरी ओर घर के कई काम करती है। बिजली, पानी, टेलिफोन का बिल जमा करवाना, बॅंक, पोस्ट ऑफिस ये सारे काम वह करती है। बच्चों की देखभाल, सौदा सुलभ करने बाजार जाना, मेहमानों की आवभगत करना जैसे काम तो मानों उसी के है। इसके समर्थन में सीधा तर्क यह दिया जाता है कि स्त्री को अधिकार मिले तो उसे कर्तव्यों का भी निर्वाह करना चाहिए। इतना सब करने पर भी पति और ससुरालवालों का विरोध वह सहन करती है, चुप रहती है क्योंकि सबंधों का निर्वाह करना उसके संस्कार है। स्त्री की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह पुरूष से किसी भी बात में कम नहीं है। अनामिका के शब्दों में "शक्ति का अर्थ यदि पशुबल है तो स्त्रियाँ पुरूषों से कमतर हैं, मगर उसका अर्थ यदि आत्मबल, बुद्धिबल और मनोबल है तो स्त्रियाँ पुरुषों से उन्नीस नहीं बीस हैं।"[6] अनामिका लिखती है कि सामान्यतः तीन प्रकार के आरोप स्त्री समाज पर लगाये जाते हैं। पहला यह कि स्त्रियाँ अतिभौतिकतावादी, देहवादी और भोगप्रिय होती हैं। दूसरा यह कि स्त्रियाँ किसी बात का कचूमर निकाल देती हैं। असत्य बोलना, बकबक करना, गप्प हाकना, झगड़े और परिहास उनका स्वभाव बन गया हैं। तिसरा आरोप यह है कि स्त्रियों को बनाव-श्रृंगार में अधिक रुचि होती है। वे अधिक समय इसी में बीता देती है। परंतु अनामिका इन आरोपों का खंडन करती हैं। उसके अनुसार यह आरोप अतिवादी हैं। उन्हें संत बनाकर नहीं रखा जा सकता। उसकी उदारता एवं उदात्तता यह है कि वह एक साथ कई धरातलों पर जी लेती है वह दैहिक शोषण की 'साइट' रही है। वह मारपीट, गाली गलौच, नोच-खसोट, यांत्रिक संभोग, यौन शोषण की शिकार रही है। इसलिए

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

घुस लेती हुई कोई महिला अफसर जल्दी नहीं देखी जाती। घोटालों में इक्का दुक्का महिला मुख्यमंत्रियों का नाम आया भी है तो अपवाद स्वरूप आकड़ें बताते हैं कि औरतें छवि मटियामेट करवाने वाले काम नहीं करती।

स्त्री की संवेदनशीलता, उनकी सहनशीलता को दृष्टि में रखकर लेखिका उन्हें गाय के समान मानती है। गाय वह निरिह प्राणी है जिसे 'सर्वसहा' कहा जाता है। लेखिका के शब्दों में "गाय पर जो पहली कविता मैंने प्राइमरी स्कूल में पढ़ी थी, वह शायद औरतों पर भी लागू हैं - उन औरतों पर जिन्हें सींगदार, मरखण्ड, फैमिनिस्ट कहकर जाति बहिष्कृत किया जाता हैं। …मरकर देती खाल, खाल से चप्पल, जूते बनते हैं, लगे न ठोकर, गड़े न कांटा, जब हम इन्हें पहनते हैं।"[7]

नारी शक्ति की उदारता, उदात्तता, उसके परिश्रम को दृष्टिकेंद्र में रखते हुए अनामिका ने यह विचार व्यक्त किया है कि "सोचकर हँसी आती है कि काटना, कूटना, गूंथना, दरकाना आदि क्रोधमूलक अभद्र क्रियाएँ चौके में भद्रता का कलेवर कैसे पा जाती है। यह मातृशक्ति का ही कमाल है कि क्रोधमूलक क्रियाओं का भी इतना सर्जनात्मक उपयोग वह कैसे कर लेती है – काटकर, कूटकर, पीसकर, गूंथकर।"[8]

सीमोन दी बोउआर ने कहा था कि स्त्रियों की स्वतंत्रता उनकी पर्स में निहित है। परंतु भारतीय स्त्री इस दृष्टि से अभी भी स्वतंत्र नहीं है। वह नौकरी करती है परंतु उसके वेतन पर उसके पति का अधिकार होता है। उसकी चेक बुक पति के पास रहती है यह यथार्थ है कि दुनिया भर की औरतें पुरुषों की तुलना में तीन गुना अधिक काम करती हैं। परंतु दुनिया भर की संपत्ति का मात्र 2.2 हिस्सा स्त्रियों के नाम पर है। वो केवल परिश्रम करने के लिए ही पैदा हुई हैं। इस पर भी उनकी त्रासदी यह है कि मारपीट, गाली-गलौच, भृणहत्या, बलात्कार, यौन शोषण, दहेज-दहन, वेश्यावृत्ति, दुनियाभर के जितने अपराध हैं उन सबका 'प्राइम साइट' स्त्री का शरीर है। इसी कारण अनामिका ने तुलसीदास की निम्नलिखित काव्य पक्तियों को उद्धृत करते हुए स्त्री विषयक अपने चिंतन को व्यक्त किया है – 'केहि विधि सूजी नारि जग माही। पराधीन सपनेहू सुख नाही।'

स्त्री की स्थिति उस कस्तुरी मृग के समान है जिसकी नाभी में कस्तुरी है परंतु वह उससे अनभिज्ञ है। स्त्री में भी अपार ऊर्जा है परंतु वह उससे अनभिज्ञ है। इक्कीसवीं शती में स्त्री ने अपनी कस्तुरी को पहचाना है अब उसमें भटकाव नहीं है। उसे अपने अस्तित्व पर गर्व है। स्त्रियों का शरीर कोमल होता है परंतु वे अथक परिश्रम कर सकती है, करती है। दुख या कष्ट सहन कर सकती है, करती है।

भारतीय साहित्य पर चिंतन व्यक्त करते हुए लेखिका इस निष्कर्ष पर आती है कि भारतीय भाषाओं में जो लिखा जा रहा है उसकी तुलना में अंग्रेजी में लिखा जा रहा भारतीय साहित्य अधिक प्राणवान है। भारतीय साहित्य की स्थिति दस भुजाओं वाली दुर्गा के समान है। जो दस दिशाओं में व्याप्त और बहुआयामी है। भारतीय साहित्य में व्यापकता है। इस संदर्भ में अनामिका ने लिखा है "भारतीय साहित्य जिसका एक पक्ष वेद, उपनिषद आदि में तथा योग-मीमांसा-न्याय-सांख्य-योगाद्वैत के विशिष्ट ग्रंथों में प्रतिपादित आकाशधर्मिता है तो दूसरा पक्ष वात्स्यायन के 'कामसूत्र' और 'नीति श्रृंगार' तथा 'युद्ध शतको' में प्रतिपादित आकण्ठ मग्न इह लौकिकता, जो अपनी परकाष्ठा पर पहुँचकर खुद योग का द्वार खोल देती है।"[9] भारतीय साहित्य में भक्ति आंदोलन एवं भक्ति साहित्य को विस्मृत नहीं किया जा सकता। कश्मीर से लेकर केरल तक महिला साहित्यकार दृष्टिगत होती हैं जिनमें प्रमुख है मिथिला की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

चंद्रकांता, दक्षिण की अंडाल, अक्कमहादेवी, महाराष्ट्र की गोदा, बहिणाबाई, राजस्थान की मीरा, आगे चलकर स्त्री कवयित्रियों में महादेवी वर्मा, बालमणि अम्मा, कुंतल कुमारी साबत, इंदिरा संत आती हैं। जिनकी कविताओं में पीड़ा एवं एकांत बोध व्यक्त हुआ है। कमला दास, अमृता प्रीतम, अनीता देसाई, इस्मत चुगताई की कथा कृतियाँ आती हैं। इधर भारतीय साहित्य में महाश्वेता देवी, राजन कृष्णन, भुपल्ला, रंगनयमक्का जैसी लेखिकाएँ जिनका लेखन कृषकों, नारियों एवं दलितों से संबंधित है।

यह विशेष है कि भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आदिवासी और दलित स्त्री लेखन का बनता है। लेखिका के शब्दों में "उनके विशिष्ट अनुभववृत्त को समर्पित-माथे पर ईंट / लकड़ी / पानी का मटका / हाथ में ठेकेदारी का फरमान और पेट में नौ महिने का बच्चा लेकर धीरे-धीरे जंगल, पहाड़ों के रास्तों पर और ऊपर चली जाती स्त्रियों के अनुभववृत्त को, दलित स्त्रियों के अनुभववृत्त को, घर में पुरुष अहंकार एक गाल पर जिन्हें थप्पड़ जड़ता है तो गली में जातीय अहंकार दूसरे गाल पर।"[10]

यह निर्विवाद है कि बीसवीं शती का उत्तरार्ध संक्रमण काल रहा है। इस काल में आकर प्राचीन मान्यताओं, स्थापनाओं, अवधारणाओं को महत्वहीन माना गया क्योंकि अब संपूर्ण शक्ति के साथ जागने का समय आ गया है। लेखिका के अनुसार इस संक्रमण काल में मास कल्चर् पनपने लगा, शॉपिंग एकमात्र धर्म हो गया, कॉसमेटिक्स सबसे बड़ा विचार और विद्यालय कामचलाऊ ज्ञान के केंद्र बन गये हैं। "विद्या और शांति भी खरीदे जानेवाले पण्य, मुस्कान सिर्फ टेलीविजन पर दिखाई देती है, उत्साह सिर्फ दारू पार्टियों में, काट सिर्फ डिजाइनर कपड़ों में, खनक सिर्फ सिक्कों में, धर्म 'मुँह में राम बगल में छुरी' का साक्षात मंचन हो गया है। स्वतंत्रता दो सुपर मार्केटों या दो ब्राँडों के चुनाव का प्रश्न रह गई है, खुशी सिर्फ मजा बन गई है, नागरिक केवल उपभोक्ता रह गया है - हम मानकर चलने लगे हैं कि कला-साहित्य भी मार्फिन या एनेस्थेशिया का इंजेक्शन भर है और वजूद के प्रश्न कठपुतली के नाच के से ज़्यादा अहमियत नहीं रखते।"[11]

इस युग में आदर्श भारतीय स्त्री का अर्थ है - पाश्चात्य साहित्य की पोर्शिया और भारतीय मिथक सावित्री का संयोग। वह इतनी सुशिक्षित होनी चाहिए कि चर्चा-परिचर्चा में भागीदार बने लेकिन अपने स्वयं के दुखों को, कष्टों को, चुपचाप सहती रहे और किसी न किसी पुरुष की छाया मात्र हो। अनामिका ने भारतीय मिथकों में चित्रित सावित्री, सीता, शकुंतला, वासवदत्ता आदि के चरित्रों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि नारी की स्वतंत्रता का अर्थ परिवार से अलग रहकर स्वच्छंद जीवन अपनाना नहीं है, अपितु परिवार एवं पति के साथ रहते हुए जीवनयापन करना है। अनामिका के शब्दों में "यह खासा रोचक है कि युनानी देव-देवियाँ और भारतीय देवता भी ईर्ष्या, प्रतिशोध भावना, कामुकता आदि दोषों के शिकार दिखाये हैं, पर देवत्व जब मनुष्य और खासकर स्त्री पर घटित दिखाया जाता है तो उससे उम्मीद की जाती है कि इन सब दोषों से परे वह करूणा, क्षमा, औदार्य और पर दुख कातरता की विनम्र प्रतिपूर्ति हो।"[12] यह एक आश्चर्य है कि सीता, सावित्री जैसी बागी स्त्रियों को एक मूक आज्ञाकारी स्त्री के रूप में देखा जाता है। वास्तव में न सीता कठपुतली थी न सावित्री, दोनों के स्वतंत्र व्यक्तित्व थे और समय आने पर दोनों ने निर्भय होकर निर्णय का तेज दिखाया। यह विडंबना ही है कि अन्यायी, असंस्कृत, भ्रष्ट पति की मूक प्रतिछाया बनकर रहने वाली दीन हीन स्त्रियों को सीता-सावित्री कहा जाता है। सीता को जब राम द्वारा वन भेजा गया तब उसने

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

चुनौती स्वीकार कर ली और लव-कुश को जन्म ही नहीं दिया बल्कि उन्हें वीर बनाया। जिन्होंने राजा राम के समक्ष जाकर अपना अस्तित्व सिद्ध किया। यह भी एक संयोग ही है कि क्राइस्ट, जाबाल और शिवाजी का पालन पोषण पिताओं ने नही माताओं ने किया हैं।

अनामिका भारतीय देवी-देवताओं के प्रतीकात्मक स्वरूप पर विचार करती है। तो यह अनुभव करती है कि शक्ति के दो बिंब हैं, दो रूप हैं - दुर्गा और काली। इन दानों को समस्त देवताओं ने अपना तेज संचित कर गढ़ा हैं। ये देवियाँ दुष्ट दलनकारी कही जाती हैं। देवी सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री थी और ब्रह्मा ने उसके साथ समागम किया, जो विद्या की दात्री है उसका शोषण परिवार में ही हुआ, आज भी देवी सरस्वती पूज्य है परंतु ब्रह्मा की कही पूजा नहीं होती। लक्ष्मी की पूजा प्राचीन काल से आज तक हो रही है। लक्ष्मी कभी कैद में नही रहती और उल्लू की सवारी करती है। इसी प्रकार माधवी, शकुंतला, दमयंती, वासवदत्ता, राधा, रुक्मिणी, द्रौपदी का जीवन के पति रूख खुला हुआ है। ये इसलिए प्रसिद्ध नायिका है कि इनमें पिटी-पिटाई लकीर लांघने का तेज है। अपने सिद्धांत पर अटल रहने की दृढ़ता है।

अनामिका भारत में टूटते बिखरते परिवारों के प्रति चिंतित है। उसी के शब्दों में "परिवार तेजी से टूट रहे हैं -आधुनिकता के पहले दौर में संयुक्त परिवार टूटे, टूटने ही थे, आज न्युक्लीअर परिवार के इलेक्ट्रान, प्रोटान और न्यूट्रान (पति, पत्नी और बच्चे) भी अक्सर तीन दिशाओं में छिटक गये से दिखते हैं, जो अपने आप में बहुत बड़ा विस्फोट है। बच्चे छात्रालयों या डे केअर केन्द्रों में और माँ-बाप अलग-अलग नौकरियों पर, बहुधा अलग-अलग शहरों में। भारत में भी रिमोट कंट्रोल विवाह का प्रतिशत कुछ कम नहीं है, जहाँ महिने दो महिने में दम्पतियों का मिलना होता है और फिर अपनी-अपनी घरौंदा-गृहस्थी (एक...: सोलो फॅमिली) में मग्न हो जाते है।

नारीवाद के स्वर को तेजस्वीता से मुखरित करने वाली अनामिका लक्ष्मण द्वारा शुपर्णखा से किये गये व्यवहार का विरोध करती है। शुपर्णखा सोलह साल की युवती थी और वन में लक्ष्मण जैसे सुंदर पुरुष को देखकर मोहित हो गई। ऐसे समय में उसे समझाने बुझाने की बजाय उसे कुरूप बना देना समीचीन नहीं था। लक्ष्मण में नारी के प्रति सहानुभूति का अभाव दृष्टिगत होता है।

अनामिका ने महिला साहित्यकारों पर भी अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनके अनुसार साहित्यकार महिलाएँ नारी चरित्रों का चित्रण करने में अधिक आत्मीय एवं सक्षम रही हैं। पहले जब स्त्रियाँ कलम उठाती थी तो उनमें एक मनोवैज्ञानिक पुअर लिजा कॉम्प्लेक्स होता था, बेचारी दुख की मारी वाला भाव। आधुनिक स्त्री लेखन आत्मविश्लेषणात्मक है और उसके 'मैं' का विस्तार इतना बढ़ गया है कि उसमें सारी दुनिया समा गई है।

महिला कथाकारों के लेखन के संदर्भ में अनामिका अपना यह मत व्यक्त करती है कि मैत्रेयी, मंजुल भगत, रजनी गुप्त आदि कुछ महिला रचनाकारों के यहाँ छोटे-छोटे कामों में रचनात्मक सुख ढुंढ़नेवाली माओ, मौसियों, बुआओं और चाचियों का चित्रण भरपुर हो रहा है। उपपत्नियों, अकेली स्त्रियों, विकलांगों, वृद्धाओं और सारी स्त्रियों के श्वास अस्मिता पूरे ढस्से के साथ पुनसृजित करने का तेज भी मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डे, रानी सेठ, कमल कुमार, चंद्रकांता, मीरा सीकरी, सिम्मी हर्षिता आदि हमारी समकालीन स्त्री रचनाकारों में है। जिनका जीवन किसी कारण पटरी से उतर गया है प्राय: वे ही उनकी नायिकाएँ हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

दलित महिला साहित्यकारों ने नारी के यौन शोषण को, उनके साथ की जा रही मारपीट, गाली-गलौच आदि स्थितियों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। जिनमें सुशिला टाकभौरे, कुसुम मेघवाल, रजतरानी मीनू प्रमुख हैं। अशिक्षा, अंधविश्वास एवं घरेलू बेगार जीवन की त्रासदी दलित स्त्री भोग रही है।

अनामिका ने 'डेट लाइन' और 'शादी डाट' इन निबंधों में नारी जीवन की त्रासद स्थिति अभिव्यक्त की है। स्त्री के लिए वृद्धावस्था एक समस्या होती है। कई बार करिअर की भागदौड़ में समय पर शादी नहीं होती। तो कई बार शादी होने पर उसमें टूटन आ जाती है। कभी असमय वैधव्य आ जाता है। बच्चे देश-परदेश में छिटक जाते हैं। उस वृद्धा को रोटी भले ही दी जाती हो पर बात करनेवाला कोई नहीं मिलता। एकाकी जीवन उसकी विवशता बन जाती है। 'मौसम बदलने की आहट' निबंध में वे यह विचार व्यक्त करती है कि पहले स्त्री तन-मन से परिवार की सेवा करती थी, परंतु अब वह कामकाजी होने के कारण कमाया हुआ धन परिवार के कल्याण हेतु खर्च करती है। इस प्रकार यह नयी स्त्री तन, मन और धन से भी सेवा कर रही है। अनामिका के शब्दों में "पहले स्त्रियाँ संबंध निभाती थी तो आर्थिक पारतंत्रताजन्य विवशता उनके साथ रहती, पति आदि से विरोध में भी है तो चुप रहकर सहना है, निभाना है इसके सिवाय उपाय भी क्या है? अब आर्थिक स्वतंत्रता है तो उपाय बहुतेरे है। स्वास्थ्य सजगता और बच्चे कम होने के कारण भी स्त्रियों का दैहिक आकर्षण अधिक दिनों तक बरकरार रहता है और पढ़ी लिखी होने के कारण आत्मीक, बौद्धिक, नैतिक परिष्कार भी उनमें आया है, पति अनेक न भी हो तो अक्सर उनके प्रशंसक अनेक होते है।"[13] स्त्री की उदार एवं उदात्त दृष्टि का एक प्रमाण लेखिका ने व्यक्त किया है। इराक युद्ध के समय एक तस्वीर 'हिंदू' के मुखपृष्ठ पर छपी थी जिसमें दस महिने का इराकी बच्चा रो रहा है और उसकी आठ वर्ष की बहन जो स्वयं बम से घायल थी अपना कष्ट विस्मृत कर उसे चुप करा रही है। स्त्री दृष्टि का यह व्यंग्य उदाहरण है। स्त्रियों की स्वभावगत विशेषता यही होती है कि वे किसी के दुखों को देखकर अपना दुख भूल जाती है। अनामिका स्वीकार करती है कि स्त्री पर होने वाले अपमान और अन्याय को रोकने के लिए अनेक कानून पारित हुए हैं जैसे दहेज, बलात्कार, यौन हिंसा, भ्रूण हिंसा, बेटियों का उत्तराधिकार, घरेलू हिंसा, सहजीवन परंतु इन कानूनों का कार्यान्वयन सफलता पूर्वक नहीं हो पाता है क्योंकि इसमें पितृसत्ता बाधक है।

अनामिका के चिंतन के विविध आयाम हैं। वह भूमण्डलीकरण के इस दौर में मध्यवर्गीय महिला के तीन रूप देखती है - एक मेकअप से दबी ढकी बेहद दुबले अक्षत यौवना बार्बी गुडिया का, दूसरे हारलिक्स मॅगीसॉस, साबूनों, शॅम्पू, खिलौनों, फॅन्सी ड्रेस खरीदती सुपर बायर सुपर मम्मी का जिसमें कम्प्यूटर ऑपरेटर, रिसेप्सनीस्ट, सेल्स गर्ल, मॉडेल, क्लर्क, टाइपिस्ट, स्टेनो आदि का समावेश है। तीसरे बॉस की डाट-फटकार सहती, उसके यौवन दोहन को सहती स्त्री का रूप है। भूमण्डलीकरण एव कार्पोरेट जगत के प्रभाव के कारण लड़कियाँ घुल रही हैं। क्रॅश डायटिंग, स्लीमिंग कोर्सेस के बढ़ते व्यापार में वे अपने आपको ॲडजस्ट कर रही है।

विश्व की स्त्रियाँ अपने लोकगीत के माध्यम से अपने दुखों को सहन करती है, संघर्ष करती है। जैसा कि अनामिका ने लिखा है "दुनिया के हर देश का ऊर्जस्वी लोकसाहित्य साथ-साथ कपड़े पछीटती, पालने डुलाती, धान कुटती, चक्की चलाती औरतों का अवदान हैं, तनाव और ऊब भी अनाज के साथ कूट-फटक देने की समवेत कोशिश का अवदान वर्ग-वर्ण-नस्ल-राष्ट्रीयता-सापेक्ष कुछ विशिष्ट समस्याओं के बावजूद विश्वभर की स्त्रियाँ

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

भगिनी-भाव से जुड़ी इसलिए हैं कि दैहिक मस्तिष्क और आर्थिक शोषण से जुड़ी ज्यादातर समस्याएँ इनकी साझा हैं और इनकी मानसिक बनावट भी मिली-जुली हैं।"[14] अनामिका ने स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्री की त्रासदी के साथ उनके अपने अस्तित्व का चित्रण किया है। 'युगों तक स्त्रियाँ मरती, क्या न करती' या 'जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया' भाव से 'कुटिल खल गामी' पतियों की भी सेवा करती गई। लेकिन केवल सेवा, प्रेम नहीं। प्रेम के लिए पात्रता चाहिए कोई ऐसी बात होनी चाहिए जो अभिभूत कर दे जैसे सयम या शालीनता जो पुरुषों में होनी चाहिए।

भाषा के संबंध में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत करती लेखिका के अनुसार हमारे दो होठ हैं। दोनों मिलते है एक लय में गतिशील होते है तो भाषा बनती है। एक हिले दूसरा स्पंदित न हो तो भाषा का सृजन असंभव होगा। भाषा का सार है संवाद, भाषण। अपनी पूर्णता में किसी तरह एकांकिता बर्दाश्त नहीं करती। वे व्यंग्यात्मक भाषा में लिखती है कि वाक्य के दो खड होते हैं - उद्देश्य और विधेय। उनमें पहले स्थान पर याने उद्देश्य के स्थान पर पुरूष की और दूसरे यानी विधेय के स्थान पर स्त्री की उपस्थिति पीछले कई वर्षों से हमारी मनीषा में दर्ज है। सत्ता जिसके हाथ में होती है, उद्देश्य का स्थान वही पर होता है, कर्ता वही होता है, वक्ता भी। बाकी श्रोता होते हैं और मूक द्रष्टा। 'महफिल उनकी, साकी उनका, आँखें अपनी, बाकी उनका' की स्थिति में स्त्रियाँ युगों से रह रही हैं।

अनामिका के लगभग सभी निबंध स्त्री विमर्श पर सशक्त भाष्य करते है। क्योंकि वे नारी मन की पारखी हैं, नारी के गुणों की कदरदान हैं। वे मानती है कि सहिष्णुता, धीरज, ममता, उदारता, क्षमा, सेवा आदि जो भी उत्कृष्ट मानवमूल्य या आध्यात्मिक मूल्य हैं सब स्त्रीलिंगी है और इन सारे मूल्यों का निवेशन स्त्री में अधिक हैं क्योंकि वह संस्कृति की प्रहरी है। वे मानती है कि वर्तमान हिंसा विह्वल आतंकातूर समय की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि स्त्रियाँ तो ध्रुवस्वामिनी हैं परंतु पुरुष अभी रामगुप्त की मनोदशा में है चंद्रगुप्त नहीं हुए। आज की स्त्री बेतहाशा अकेली है क्योंकि उसको धीरोदात्त, धीर ललित, धीर प्रशांत नायक अब आसपास दिखाई नही देता है। दिखाई देता है गाली बकता, ओछी बात करता, हल्ला मचाता, टुच्चा पुरुष जो मनसे अधिक तन का प्रेमी है।

आज के भूमण्डलीकरण और बाजारवाद में स्त्री की हँसी उसे रोजगार देती है। हम एक ऐसे दौर में जी रहे है जहाँ चारों तरफ हँसती हुई स्त्रियाँ कहीं अखबारी विज्ञापनों में, कहीं गली चौराहों पर टंगे पोस्टरों में, टी. वी. पर विज्ञापनों में। परंतु हमें उसके खटते हाथ दिखाई नहीं देते। यह कैसी विडंबना है कि स्त्री के परिश्रम की उपेक्षा की जाती है। अनामिका अपने चार साढे चार साल के पुत्र उन्नयन के साथ जा रही थी उस समय दिल्ली में मेट्रो की पटरिया बिछ रही थी। वे चौराहे पर खड़े होकर स्कूल बस की प्रतिक्षा कर रहे थे। तभी उन्नयन माँ का आँचल खींचते हुए बोला 'माँ देखो। लिखा है मैन ॲट वर्क लेकिन वहाँ काम तो औरते भी कर रही हैं।'

एक पंजाबी लोकगीत का भोजपुरी रिमिक्स है – 'मैं तो नहीं जाना.../ शहरी बाबू संग जी / बमपिलाट है उसके जूते/ और नाजूक है मेरी कमर' ये पक्तियाँ स्त्री जीवन की नियति और त्रासदी को व्यक्त करती है। आज भी स्त्रियों का जीवन खुशनुमा नही हो पाया है। विशेषत ग्रामीण स्त्रियों को अतीव कष्ट उठाने पड़ते हैं। वंचित और दलित स्त्रियों की स्थिति कुछ इस प्रकार की है 'घास खोदते खोदते दिन ढल गया / अभी तक रोटी का कोई अता पता नहीं/ माटी ही कोड़ते हुए पहुँची / हड्डियाँ समशान में / बालिश्त-भर के इस पेट के लिए।' काम में भी स्त्री के साथ भेदभाव किया जाता है। जिस काम में गति हैं, रौनक है, भ्रमण है - पुरुष के हिस्से में आते हैं, उबास, निरस और कड़ी मेहनत

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

के काम स्त्रियों के सर आते हैं। खेती के दौरान भी मर्द जब पानी ढोता है तो ट्रॅक्टर या बैलगाडी पर, और महिला सर पर तीन मटके रखकर पैदल चल पड़ती है। घुटनेभर पानी में कमर झुकाकर धान की बुआई और कटाई महिला ही करती है। पुरुष फसल ट्रॅक्टर पर लादकर मंडी में ले जाता है। संसाधनों पर मालिकाना हक औरत का कभी नहीं रहा। जबकि वे दुनिया के काम का ७६% काम खुद संभालती है।

अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अनामिका ने स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्री की आर्थिक, सामाजिक समस्याओं का निरूपण किया है। इसी के साथ उन्होंने भारतीय साहित्य में चित्रित स्त्री की छवि के विविध रूप अभिव्यक्त किए हैं। यह अभिनंदनीय है कि अनामिका अनछुए पहलुओं पर पूरे मन और मस्तिष्क से विचार करती है। और उसे अभिव्यक्त करती है। ललित निबंध की लुप्तप्राय विधा को अनामिका ने अपने छह निबंध सग्रहों में सजाया-सवारा है। जानदार भाषा, सहज भावनिक्षेप के साथ वे अपने चिंतन को व्यक्त करती है। अनामिका के निबंध पुरातन, मध्ययुगीन और अधुनातन स्त्री के विविध संदर्भों को अभिव्यक्त करने में सक्षम सिद्ध हुए हैं, उनका यह गहन चिंतन अनुपम एवं अद्वितीय है।

**संदर्भ ग्रंथ :-**

1) मधुमति - अगस्त १९८५
2) स्त्रीवादी साहित्य विमर्श - जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृ २१
3) हिंदी उपन्यासों में नारी अस्मिता - डॉ सुदेश बत्रा, पृ. ९८
4) हिंदी निबंधकार-जयनाथ नलिन, पृ १९
5) मन मांझने की जरूरत – अनामिका, पृ. ९
6) पूर्ववत् - पृ २७
7) पानी जो पत्थर पीता है अनामिका, पृ. ८७
8) मौसम बदलने की आहट - अनामिका, पृ. ११७
9) स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा - अनामिका, पृ १४५
10) पूर्ववत् - पृ १७४
11) स्वाधीनता का स्त्री पक्ष - अनामिका, पृ. ४६
12) मन मांझने की बात - अनामिका, पृ. १३
13) स्त्री विमर्श का लोकपक्ष - अनामिका, पृ. २३
14) पानी जो पत्थर पीता है - अनामिका, पृ.१६१